प्राचार्य की कलम से

शिक्षा व संस्कार हमारी सनातन परम्परा के संवाहक हैं, यही कारण है कि भारतीय संस्कृति प्राचीन से अर्वाचीन तक अपने मूल तत्त्व के साथ अक्षुण्य एवं अविचलित है। सम्भवतः यही तथ्य है कि भारतीय शिक्षा पद्धति सम्पूर्ण विश्व में अपना एक विशेष स्थान ही नहीं बनाती बल्कि एक चुनौती के रूप में अहर्निश गतिमान है।

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान इसी परम्परा के अनुसार अपने द्वारा संबद्ध विद्यालयों में शिक्षा के साथ संस्कार के महत्त्व को अनुशासित ढंग से लागू करने में सफल है। उन्हीं विद्यालयों की लम्बी शृंखला की एक लघुतम कड़ी है, अपना सरस्वती विद्या मंदिर भूली नगर। जहां अनुशासित व व्यवहारिक पद्धति शिक्षा एवं संस्कार की समृद्ध व्यवस्था बनी हुई है। हम वर्तमान पीढ़ी को समाज एवं राष्ट्र की वर्तमान समस्याओं के परिपेक्ष्य में जीवन की तमाम चुनौतियों का सामना करने योग्य नागरिक बनाने की संकल्पना पर अटल भाव से चरैवेती-चरैवेती को चरितार्थ कर रहे हैं।

सम्भव है हमसे भूले हो सकती हैं क्योंकि न तो कोई व्यक्ति पूर्ण है नहीं कोई संस्था। अस्तु! हम आपके बहुमूल्य सुझावों एवं सदविचारों का हृदय से स्वागत करते हैं। अंततः परिवर्तन की परिकल्पना को आत्मसात करना एवं भविष्य का मार्ग प्रशस्त करना यहीं हमारे विद्यालय परिवार की निरन्तरता है।

श्री सुनील कुमार सिंह